दोगुनी कृषक आय
विशेषांक

मुंजा घास के विभिन्न उत्पाद

मोती लाल मीणा[1] और **धीरज सिंह**[2]
कृषि विज्ञान केन्द्र, काजरी, पाली-मारवाड़-306401 (राजस्थान)

"मुंजा एक बहुवर्षीय घास है, जो गन्ना प्रजाति की होती है। यह ग्रेमिनी कुल की सदस्य है। इसका प्रसारण जड़ों एवं सकर्स द्वारा होता है। यह वर्षभर हरी-भरी रहती है। इसके पौधों की लम्बाई 5 मीटर तक होती है। वैसे देखा जाये तो यह एक खरपतवार है, जो खेतों में पाया जाता है। बारानी एवं मरूस्थलीय प्रदेशों में इसका उपयोग मृदा कटाव व अपक्षरण रोकने में बहुत सहायक होता है। मुंजा के पौधे एक बार जड़ पकड़ लेने के बाद लगभग 25-30 वर्ष तक नहीं मरते हैं। अधिकतर अकृषि योग्य भूमि जहां कोई फसल व पौधा नहीं पनपता, वहां पर यह खरपतवार आसानी से विकसित हो जाती है। यह गोचर, ओरण आदि जगहों पर प्राकृतिक रूप से उग जाती है। इसकी पत्तियां बहुत तेज होती हैं, हाथ या शरीर का कोई भाग लग जाये तो वह स्थान कट जाता है और खून बहने लगता है। इस प्रकृति के कारण किसान इसको अपने खेत के चारों ओर मेड़ों पर लगाते हैं। इससे जंगली जानवरों से फसल को सुरक्षा मिलती है।"

मुंजा के पूर्ण विकसित पौधे

खेत की मेड़ पर मुंजा घास

मुंजा, नदियों के किनारे, सड़कों, हाईवे, रेलवे लाइनों और तालाबों के पास जहां खाली जगह हो, वहां पर प्राकृतिक रूप से उग जाती है। इसके पौधे, पत्तियां, जड़ व तने सभी औषधीय या अन्य किसी न किसी प्रकार उपयोग में लाए जाते हैं। इसकी हरी पत्तियां पशुओं के चारे के लिये प्रयोग में आती हैं। जब अकाल पड़ता है उस समय इसकी पत्तियों को शुष्क क्षेत्रों में गाय व भैंस को हरे चारे के रूप में खिलाया जाता है। पत्तियों की कुट्टी करके पशुओं को खिलाने से हरे चारे की पूर्ति हो जाती है। यह बहुवर्षीय घास भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में पायी जाती है। इसकी जड़ों से औषधियां भी बनाई जाती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इनकी और खपत बढ़ने की प्रबल संभावनाएं हैं। पुराने समय में जब अंग्रेजी दवाइयों का प्रचलन नहीं था तो औषधीय पौधों को वैद्य और हकीम विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए प्रयोग में लाते थे। हमारे कई ग्रंथों में बहुत सी बहुमूल्य जीवनरक्षक दवाइयां बनाने वाली बूटियों का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें सरकंडा (मुंजा) की जड़ों का औषधीय उपयोग का भी उल्लेख है। आधुनिक युग में औषधीय पौधों का प्रचार व उपयोग अत्यधिक बढ़ गया है। इसका सीधा असर इनकी उपलब्धता व गुणवत्ता पर पड़ा है।

कैसे करें खेती

यह ढलानदार, रेतीली, नालों के किनारे व हल्की मिट्टी वाले क्षेत्रों में आसानी से उगाया जा सकता है। यह मुख्यत: जड़ों द्वारा रोपित किया जाता है। एक मुख्य पौधे (मदर प्लांट) से तैयार होने वाली 25 से 40 छोटी जड़ों द्वारा इसे लगाया जाता है। जुलाई में जब पौधों से नए सर्कस निकलने लगें तब उन्हें मेड़ों, टिब्बों और ढलान वाले क्षेत्रों में रोपित करना चाहिए। नई जड़ों से पौधे दो महीने में पूर्ण तैयार हो जाते हैं। इनको 30X30X30 सें.मी. आकार के गड्ढों में 75X60 सें.मी. की दूरी पर लगाना चाहिए। इसकी 30,000 से 35,000 जड़ें या सकर्स प्रति हैक्टर लगाई जा सकती हैं। पहाड़ों और रेतीले टिब्बों पर ढलान की ओर इसकी फसल लेने पर मृदा कटाव रुक जाता है। जब पौधे खेत में लगा देते हैं तो उसके दो महीने बाद पशुओं से बचाना चाहिए। सूखे क्षेत्रों में लगाने के तुरंत बाद पानी अवश्य देना चाहिए। इससे पौधे हरे व स्वस्थ रहते हैं तथा जड़ों का विकास अच्छी तरह से होता है।

मुंज के लिये पत्तियों को सुखाना

पानी का जमाव पौधे की जड़ों के लिए हानिकारक होता है तथा जड़ों का विकास कम हो जाता है। इसकी खेती सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लिए काफी उपयोगी हो सकती है। पहली बार लगभग 12 महीने के बाद मुंजा को जड़ों से 30 सें.मी. ऊपर से काटना चाहिए। इससे दुबारा फुटान अधिक होती है। यदि देखा

[1]विषय विशेषज्ञ (कृषि प्रसार); [2]कार्यक्रम समन्यवक

मुंजा के विभिन्न उपयोग

- मुंजा को घरेलू जरूरत की वस्तुएं बनाने में अधिक प्रयोग में लाया जाता है जैसे-मचला, चारपाई, बीज साफ करने के लिये छाज, रस्सी, बच्चों का झूला, छप्पर, बैठने का मूढ़ा आदि सजावटी समान
- रेगिस्तानी क्षेत्र जहां पर रेतीली मृदा हो, उन क्षेत्रों में हवा द्वारा मृदा कटाव एक बड़ी समस्या है। ऐसे स्थानों पर मुंजा एक सफल पौधा है, जो मृदा कटाव को 75 प्रतिशत तक कम करता है।

- बड़े-बड़े खेतों के चारों ओर मेड़ों पर मुंजा लगाने से बाहरी तेज व गर्म हवाओं से फसल को लू के प्रकोप से बचाया जा सकता है।
- गर्मी में खीरावर्गीय सब्जियों की रोपाई के बाद तेज धूप से बचाव के लिये मुंजा के सरकंडों का प्रयोग छाया के लिए किया जाता है। इससे लू का प्रकोप लताओं पर नहीं पड़ता तथा लताएं स्वस्थ रहती हैं।
- गांव में गर्मी के मौसम में जब काम नहीं हो, उस समय मुंजा के कल्लों से मूंझ निकालकर उसकी रस्सी व कई प्रकार की घरेलू आवश्यकता वाली वस्तुएं बनायी जाती हैं।
- इसके सरकंडों का प्रयोग छप्पर बनाने में किया जाता है। बड़े-बड़े राष्ट्रीय मार्गों पर होटलों एवं रेस्तरां में विभिन्न प्रकार के आकर्षक छप्पर बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। यह गर्मी में बहुत ठण्डी रहती है।

- रेतीले क्षेत्रों में वर्षा के समय जब पानी का बहाव ज्यादा हो, उस वक्त इसका प्रयोग मृदा कटाव रोकने में किया जाता है।
- ग्रामीण महिलाएं इसकी फूल वाली डण्डी से विभिन्न प्रकार की आकर्षक वस्तुयें जैसे-छबड़ी, चटाई, पंखी, ईण्डी का घेरा आदि बनाती हैं।
- सरकंडों का प्रयोग ज्यादातर पौधशाला एवं वर्मीकम्पोस्ट बनाने वाली इकाइयों को छायादार बनाने में किया जाता है।

- इसका उपयोग जैविक पलवार के रूप में भी किया जाता है।
- मुंजा का प्रयोग ग्रीसिंग पेपर बनाने में किया जाता है।
- इसकी जड़ों के पास से निकली नई सकर्स का उपयोग चावल के साथ उबालकर खाने में किया जाता है।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसके सरकंडों से चारा संग्रहण के लिये एक गोल आकार की संरचना बनाकर किसान सूखे चारे व बीजों को स्टोर करते हैं, जो 10-12 वर्षों तक खराब नहीं होता है।
- यह पशुओं के लिए बिछावन बनाने में काम आता है।
- फसलों को पाले से बचाने में किसान इसका उपयोग करते हैं।
- भेड़-बकरियों का बाड़ा बनाने में इसके सरकंडों का इस्तेमाल किया जाता है।
- इसकी राख से कीटनाशक जैविक उत्पाद बनाया जाता है।

जाये तो एक पूर्ण विकसित पौधे से जड़ों का गुच्छा बन जाता है। इससे लगभग 30-50 कल्लों (सरकंडों) का गुच्छा बन जाता है, जो 30 से 35 वर्षों तक उत्पादन देता रहता है। पूर्ण विकसित मुंजा के गुच्छे से प्रतिवर्ष कटाई करते रहना चाहिए। इससे मिलने वाले उत्पादों से अधिक लाभ कमाया जा सकता है। इसे बाजार में 4-5 रुपये प्रति कि.ग्रा. की दर से ताजा भी बेचा जा सकता है। मुंजा को रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं पड़ती फिर भी यदि आवश्यकता हो तो 15-20 टन प्रति हैक्टर देसी खाद डालनी चाहिए। इसकी औसत पैदावार 350-400 क्विंटल प्रति हैक्टर प्राप्त की जा सकती है।

उपयोग

मुंजा को ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बहुत अधिक प्रयोग में लाया जाता है। इसकी जड़ों और पत्तियों का प्रयोग विभिन्न

मुंजा के पौधे में फूल

प्रकार की औषधियां बनाने में किया जाता है। मुंजा एक लाभदायक खरपतवार है। इसके लाभ ज्यादा हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में इससे भूमिहीन कृषकों और ग्रामीणों को रोजगार मिलता है। भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान आदि देशों में मुंजा से ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 33 प्रतिशत रोजगार मिलता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में शादी-पार्टियों में इससे बने उत्पाद काम में लिये जाते हैं। वैज्ञानिक तौर पर देखें तो पाया गया है कि इसकी रस्सी से बनी चारपाई बीमार व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है। मुंजा की रस्सियों से बनी चारपाई पर सोने से कमर दर्द और हाथ-पैर में दर्द नहीं होता है। पशुओं के पैर में हड्डियां टूट जाने पर इसके सरकंडों को मुंजा की रस्सी से चारों तरफ बांधने पर आराम मिलता है। पशुओं व मनुष्यों में इससे बने छप्पर के नीचे सोने पर गर्म लू का प्रभाव कम हो जाता है।

कटाई एवं उपज

मुंजा की कटाई प्रतिवर्ष अक्टूबर से नवंबर में करनी चाहिए। कटाई उस समय उचित मानी जाती है, जब इसकी ऊंचाई 10 से 12 फीट हो जाये तथा पत्तियां सूखने लगें व पीले रंग में परिवर्तित हो जायें। कटाई के बाद सरकंडों को सूखने के लिये 5-8 दिनों तक खेत में इकट्ठा करके फूल वाला भाग ऊपर तथा जड़ वाला भाग नीचे करके खेत में मेड़ों के पास खड़ा करके सुखाना चाहिए। सूखने के बाद कल्लों से फूल वाला भाग अलग कर लेना चाहिए और बाजार में बेचने के लिये भेजना चाहिए। सूखे हुए सरकंडों से पत्तियां, कल्ले और फूल वाला भाग अलग कर लेना चाहिए। इस प्रकार प्रति हैक्टर 350-400 क्विंटल उपज प्राप्त की जा सकती है। एक अनुमान के अनुसार इससे प्रति हैक्टर औसतन 85,000 से 100,000 रुपये आय प्राप्त की जा सकती है। ■